

BHAR. (nach einer ungenannten Autor.) ebend.

नीर्बल (सकृत् नि) adj. bewältigend: शत्रूणां नीर्बलमिति वाक्यः AV. 5, 20, 11.

नीर्हार (scheinbar von कृत् mit नि) m. 1) *Nebel* AK. 1, 1, 9, 19. TRIG. 1, 1, 87. H. 1072. HALAJ. 3, 28. AV. 6, 113, 2. 18, 3, 60. नीर्हारेण प्रावृत्ता जल्प्या चा-  
मुत्पं उक्थशासंश्चरति RV. 10, 82, 7. VS. 22, 26. 25, 9. TS. 7, 5, 44, 1. TAITT.  
Ār. 1, 10, 7. 6, 4, 1. KATH. 28, 4. KHAND. UP. 3, 19, 2. CVETACV. UP. 2, 11.  
M. 4, 113. JAGN. 1, 150. वसुधारेणुसंवीतो — ब्रह्मजतुर्यथा शैलौ नीर्हारेणा-  
भिसंवृतौ Hip. 4, 40. एवं तयोक्तौ भगवानीकारमसृत्प्रभुः । येन देशः स स-  
र्वस्तु तमोभूत इवाभवत् ॥ MBh. 1, 2403. fg. खाण्डवं च वनं सर्वं पाण्डवो  
बहुभिः शैरः । प्राच्छादयदमेयात्मा नीर्हारेणो व चन्द्रमाः ॥ 8234. तस्मात्  
संशयः कृत्ते नीर्हार इव नश्यत् 3, 1199. नादृश्यत तदा द्रोणो नीर्हारेणो  
संवतः 4, 1859. 1999. 14, 1741. R. 1, 55, 25. 3, 22, 5. 11. 19. सनीर्हार इवो-  
दुराट् 4, 5, 14. 6, 16, 56. 104, 17. SUG. 1, 114, 1. RAGH. 7, 57. VARAH. BRH.  
S. 3, 92. 29, 21. Bhaig. P. 4, 12, 10. नीर्हारं यद्विदुस्तमः 3, 12, 33. उदति-  
ष्ठन्नस्तस्य नीर्हारदिव भास्करः 4, 10, 15. अर्घं धुन्वति कात्स्न्येन नीर्हा-  
रमिव भास्करः 6, 1, 15. — 2) *Entleerung*: आहारनीर्हारविधिस्त्वदृश्यः  
H. 38; viell. fehlerhaft für निर्हार.

नीर्हारकर (नो + 1. कर) m. der Mond DAÇAK. 7, 3 v. u.

नीर्हाराप् ० पते = नीर्हारं करोति P. 3, 1, 17, VArt. 3.

1. नु indecl. am Anfange des Verses regelmässig gedehnt, häufig  
auch an anderen Stellen; s. RV. PRAT. 7, 10. 11. 19. P. 6, 3, 133. = लि-  
प्रम् NAGH. 2, 15. पृच्छायाम् und विकल्पे AK. 3, 4, 32 (COLERA. 29). 9. H.  
an. 7, 11. MED. avj. 41. fg. वितर्के (तर्के AK. 3, 5, 18, v. l.) H. an. MED.  
HALAJ. 5, 94. अनुनये (अनुनाये H. an.), अतीति (तीर्थे H. an.), अपमाने,  
हेतौ, अपदेशे MED. 1) *nun. a*) zeitlich *nun*, *jetzt*: नु इत्या तै पर्वथा च  
प्रवाच्यम् RV. 4, 132, 4. नु च (Nir. 4, 17) पूरा च 96, 7. विज्ञोर्नु कं वीर्यी-  
णि प्र वौचम् 1, 154, 4 (oder zu d). नवं नु स्तोमं जीजनम् 7, 15, 4. आ मो  
पूषन्पुं द्रव शंसिषं नु तै 6, 48, 16. मा परा गाः सोमस्य नु त्वा पति 3, 53, 2.  
53, 18. अस्ति स्विनु वीर्यं तत् इन्द्र न स्विदस्ति *hast du noch diese*  
*Kraft?* 6, 18, 3. स इतत लोकान् सृजा इति AIT. UP. 1, 1. स इतते नु लो-  
काश्च लोकपालाश्च 3, 1. — b) folgernd und abschliessend; oft den Schluss-  
satz eines Liedes beginnend: *nun, also*: अप्यू नु पत्नीर्वषणो जगम्युः  
RV. 4, 179, 1. नु नो रास्व 3, 13, 7. 5, 17, 5. 1, 64, 15. 4, 16, 21. 44, 6. नु मे  
कृत्वा प्रणुतम् 7, 67, 10. 62, 6. 75, 8. 9, 93, 5. नु म आ वाचमुप याहि 6,  
21, 11. नि वो नु मन्वुर्विशताम् *also lege sich emer Eifer* 10, 34, 14. नि-  
र्देशो न्वस्तु AIT. Br. 7, 17. यज्ञमानो नु पापीयान्भवति 3, 11. इति नु 4, 1, 21.  
ÇAT. Br. 4, 6, 3. 6, 2, 2, 7. अथ नु मीमांस्यमेव ते KENOP. 9. अथ नु किमनु-  
शिष्टो ज्वोचयः KHAND. UP. 5, 3, 4. — c) den Uebergang bildend oder  
überh. einleitend: किमू नु वेः कृणवाम RV. 2, 29, 3. 1, 124, 1. धीरा न्व-  
स्य मक्षिना जन्विष 7, 86, 1. 2, 11, 4. न यस्य वर्ता जनुषा न्वस्ति 4, 20, 7.  
54, 1. 7, 68, 5. 8, 70, 8. AV. 6, 124, 1. — d) ermunternd, auffordernd: *so* —  
*denn*: योना न्विन्द्र ते करे RV. 1, 82, 1. अग्नि नु मा चतमोद्याः 2, 33, 7.  
5, 45, 5. कृतो नु किमाससे 8, 69, 5. 9, 9, 8. मद्या मेदम सकृ नु संमानाः 3, 38,  
6. 6, 52, 5. वयं नु तै द्वाद्यासः स्याम 7, 37, 4. AV. 6, 60, 2. पतिं नु मे पुनर्यु-  
वाणं कुरुतम् ÇAT. Br. 4, 1, 5, 10. 11, 8, 3, 5. देहि नु नः AIT. Br. 4, 25. नू  
नु RV. 1, 17, 8. — e) bei Fragen, besonders in der wiederholten Frage,  
verstärkend: कदा नु RV. 4, 23, 6. कुविनु 3, 42, 2. कथो नु 5, 29, 13. कद्

IV. Theil.

न्वस्याकृतम् 8, 55, 9. को नु वाम् 5, 67, 5. 1, 165, 13. 10, 102, 10. कुरु त्या  
कुरु नु श्रुता 5, 74, 2. किं स्विद्व्यामि किमू नु मन्ये 6, 9, 6. अपि नु  
AIT. Br. 7, 27. कथं नु 4, 23. AV. 5, 11, 2. 8, 9, 25. 10, 2, 2. 10. कति नु 12,  
4, 43. 5, 5. किं नु तिष्ठसि 15, 3, 1. क्वा नु ÇAT. Br. 1, 2, 5, 9. 3, 4, 26. — कं  
नु पृच्छामि MBh. 3, 2428. को नु 2429. Hip. 2, 11. 32. R. 1, 1, 2. 4, 1. 3, 57,  
19. Bhaig. P. 5, 6, 16. इतः कष्टतरं किं नु Hip. 1, 5. HIT. I. 176. किं नु गर्हा-  
म्यथात्मानमथ भीष्मम् MBh. 3, 6003. 3, 2797. R. GORR. 2, 107, 2. कथं नु  
MBh. 3, 2372. fg. 2713. RAGH. 2, 54. ÇAN. 140. VIKR. 9. HIT. I. 21. कदा  
नु किम् R. GORR. 2, 107, 2. क्वा नु MBh. 3, 2498. 2643. 2902. को नु खलु  
ÇAN. 101, 19. 20. किं नु खलु स्यात् *was mag das wohl sein?* 71, 20. 35,  
2. किं नु खलु यथा वयमस्यामेवमियमस्मान्प्रति स्यात् 17, 13. 32, 12. किं  
नु खलु *warum wohl?* 60, 4. क्वा नु खलु 32, 11. 41, 17. कदा नु खलु MBh.  
3, 2675. ततो दुःखतरं नु किम् 4, 559. R. GORR. 2, 66, 61. विप्रान् को न  
विषक्ते Bhaig. P. 3, 16, 9. विज्ञोर्नु वीर्यगणनां कतमो ऽर्हतीह 2, 7, 40.  
कुतः पुनस्ते भगवन्नु दर्शनात् 3, 33, 6. सुता किं नु मृता नु किं मनसि मे  
लोना विलीना नु किम् AMAR. 36. अबुद्धिर्वत किं राजा विपरीतमतिर्नु  
किम् R. GORR. 2, 40, 6. Ohne Fragepronomen in zwei- oder mehrglie-  
drigen Fragesätzen: अर्हिर्नु ऽ रज्जुर्नु P. 8, 2, 98. Sch. (तत्) तया गृहीतं नु  
मृगाङ्गनाभ्यस्ततो गृहीतं नु मृगाङ्गनाभिः KUMĀRAS. 1, 47. स्वप्ने नु माया  
नु मतिभ्रमो नु क्लिष्टं नु तावत्फलमेव पुण्यम् ÇAN. 137. VIKR. 9. चित्रे निवे-  
ष्ट्य परिकल्पितसन्नयोगा (Ende der ersten Frage) द्वयोश्चयेन मनसा वि-  
धिना कृता नु ÇAN. 42. धावति वर्त्मनि तरति नु वाजिनस्ते 8, v. l. नु —  
स्विदु — स्विदु — नु KIR. 8, 35. किं नु पूर्वं परजिषीरात्मानमथ वा नु  
माम् MBh. 2, 2204. ग्रहीयति कृस्तिनः किं मृगां नु चरिष्यति । कृनि-  
प्यति न (wohl नु zu lesen) खत्वस्मान्तेन्यं कृतदमानुषम् R. GORR. 2, 91.  
4. ब्रुहि सुमध्यमे । स्वप्ने नु स मया दृष्टो यदि वा सत्यमेव तत् SĀV. 3, 71.  
— f) नु — नु *entweder — oder*: अभिषेदयति रामं नु राजा यज्ञे नु पद्य-  
ते । इत्येकं कृतसंकल्पो कृष्टो यात्रामयासिषम् R. 2, 72, 27 (74, 28 GORR.).  
BHATT. 6, 17. drei Mal wiederholt: अथ जयाप नु मेरुमहीभित्ता रुमसा नु  
दिगन्तदिदक्षया । अभिययो स हिमाचलमुच्छ्रितं समुदितं नु विलङ्घयितुं न-  
मः KIR. 5, 1. mit *va* oder verbunden: ये वानयोर्दममधीश भवान्विधत्ते वृत्तिं  
नु वा Bhaig. P. 3, 16, 25. — g) überhaupt bestätigend und versichernd:  
*nämlich, gewiss, gar*. Häufig hebt es das Wort hervor, auf welches es  
folgt, ohne bestimmter zu fassende Bedeutung. न नानु गान्यनु नू गमानि  
RV. 4, 18, 3. मरुता इन्द्रः परश्च नु मर्दित्वमेस्तु वृद्धिर्णे und noch *weiterhin*  
1, 8, 5. उवासोषा उच्छाञ्च नु 48, 3. जघानं जघनेच्छ नु 9, 23, 7. या चकथं या  
चो नु नव्या कृणवः 5, 29, 13. एकं नु क्वा सत्यंति प्रणीमि 32, 11. गर्भे नु  
*schon im Mutterleibe* 10, 10, 5. प्र नू स मर्तः शर्वसा जना अति तस्थौ 1.  
64, 13. AV. 4, 19, 1. 10, 2, 28. 18, 2, 57. त्वं नु खलु नो ब्रह्मिष्ठो ऽसि ÇAT.  
Br. 14, 6, 4. 4. 3, 8, 2. AIT. Br. 3, 13. पूर्वं नु, अवरं 2, 3. कर्मकार्षीः कि-  
म् । अहं नु करोमि oder अहं न्वकार्षम् *ja wohl habe ich es gemacht* P. 3.  
2, 121, Sch. भगवांस्ते प्रजाभर्तृर्हृषीकेशो नु तुष्यति Bhaig. P. 3, 13, 12.  
चेतो ऽलिवद्यदि नु ते पदयो रमेत 13, 49. 25, 37. 4, 19, 34. 5, 11, 2. 7, 8, 49.  
So in Verbindung mit andern Partikeln verwandter Bedeutung; mit  
चिदुः नित्यं चिनु यं सदेनं जगृधे RV. 1, 148, 3. सो चिनु न मरति 191, 10.  
68, 7. 5, 41, 13. 17. 10, 11, 3. सद्यश्चिनु 7, 19, 9. AV. 5, 11, 4. mit अथ (s.  
auch u. d. W.): रोदसी अपृणा उत प्र रिक्था अथ नु und *gar* RV. 3, 6.  
2. 38, 2. 53, 6. 10, 30, 10. mit इदु 1, 52, 11. 164, 32. 2, 11, 16. 17. अय्युष्टा

19 \*